

Hanuman Chalisa Hindi Lyrics

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार
बल बुधि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश विकार

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥ १ ॥

राम दूत अतुलित बल धामा
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥ २ ॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी
कुमति निवार सुमति के संगी ॥ ३ ॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥ ४ ॥

हाथ बज्र अरु ध्वजा बिराजे
काँधे मूँज जनेऊ साजे ॥ ५ ॥

शंकर सुवन केसरी नंदन
तेज प्रताप महा जगवंदन ॥ ६ ॥

विद्यावान गुनी अति चातुर
राम काज करिबे को आतुर ॥ ७ ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया
राम लखन सीता मनबसिया ॥ ८ ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा
विकट रूप धरि लंक जरावा ॥ ९ ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे
रामचंद्र के काज सवारै ॥ १० ॥

लाय सजीवन लखन जियाए
श्री रघुबीर हरषि उर लाए ॥ ११ ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई
तुम मम प्रिय भरत-हि सम भाई ॥ १२ ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावै
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥ १३ ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा
नारद सारद सहित अहीसा ॥ १४ ॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते ॥ १५ ॥

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥ १६ ॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना
लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥ १७ ॥

जुग सहस्र जोजन पर भानू
लिल्यो ताहि मधुर फ़ल जानू ॥ १८ ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही
जलधि लाँघि गए अचरज नाही ॥ १९ ॥

दुर्गम काज जगत के जेते
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ २० ॥

राम दुआरे तुम रखवारे
होत ना आज्ञा बिनु पैसारे ॥ २१ ॥

सब सुख लहैं तुम्हारी सरना
तुम रक्षक काहु को डरना ॥ २२ ॥

आपन तेज सम्हारो आपै
तीनों लोक हाँक तै कापै ॥ २३ ॥

भूत पिशाच निकट नहि आवै
महावीर जब नाम सुनावै ॥ २४ ॥

नासै रोग हरे सब पीरा
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥ २५ ॥

संकट तै हनुमान छुडावै
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥ २६ ॥

सब पर राम तपस्वी राजा
तिनके काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥

और मनोरथ जो कोई लावै
सोई अमित जीवन फल पावै ॥ २८ ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ २९ ॥

साधु संत के तुम रखवारे
असुर निकंदन राम दुलारे ॥ ३० ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता
अस बर दीन जानकी माता ॥ ३१ ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥ ३३ ॥

अंतकाल रघुवरपुर जाई
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥ ३४ ॥

और देवता चित्त ना धरई
हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥ ३५ ॥

संकट कटै मिटै सब पीरा
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥ ३६ ॥

जै जै जै हनुमान गुसाईँ
कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥ ३७ ॥

जो सत बार पाठ कर कोई
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥ ३८ ॥

जो यह पढ़े हनुमान चालीसा
होय सिद्ध साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥ ४० ॥

दोहा

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

